दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

दिनांक : 28.05.2015

Time: 10.00 am to 01.00 pm **एम.ए., (द्वितीय वर्ष)** **पूर्णांक:75**

हिन्दी : प्रश्न पत्र-8

विशेष अध्ययनः प्रेमचंद

सूचनाः खंड 'क' से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। खंड 'ख' अनविार्य है।

खंड 'क' **4x10=40**

1. 'ठाकूर का कुआँ' में मौजूद नाटकीयता और रोमांच पर प्रकाश डालिए।

2. 'बडे भाई साहब' कहानी का केन्द्रीय कथ्य स्पष्ट कीजिए।

3. 'पूस की रात' में हल्कू किसान से 'किसान मजदूर' क्यों बनना चाहता है? कथ्य पर विचार कीजिए।

4. 'नशा' कहानी में प्रेमचंद अपने पाठकों को क्या संदेश देना चाहते हैं?

5. 'निर्मला' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

6. 'सेवासदन' की कथावस्तु का विश्लेषण कीजिए।

7. 'गोदान' की भाषा और शिल्प पर विचार कीजिए।

खंड 'ख'

8. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- **5x7=35**

क. यह खेती का मजा है! और एक-एक भागवान ऐसे पडे हैं, जिनके पास जाडा जाय तो गर्मी से घबराकर भागे। मोटे-मोटे गद्दे लिहाए - कम्बल। मजाल है कि जाडे का गुजर हो जाए। तकदीर की खूबी है! मजूरी हम करें मजा दूसरे लूटें!''

अथवा

''मैं हूँ कि पढाने में मस्त हूँ, न नहाने की सुधि है न खाने की। गुल्ली है तो जरा सी, पर उसमें दुनिया भर की मिठाइयों की मिठास और तमाशों।''

....2...

ख. मुलिया इस ऊसर में गुलाब का फूल थी। गेहुँआ रंग था, हिरन की सी आँखें, नीचे खिंचा हुआ चिबुक, कपालों पर हलकी लालिमा, बड़ी-बड़ी नुकीली पलकें, आँखों में एक विचित्र आर्द्रता, जिसमें एक स्पष्ट वेदना, एक मूक व्यथा झलकती रहती थी।

अथवा

मुझे न मालूम था के मेरे कैद होते ही लोग मेरी ओर से यूँ आँखें फेर लेंगे, कोई बात भी न पूछेगा। राष्ट्र के नाम पर मिटनेवालों का यही पुरस्कार है, यह मुझे न मालूम था।

ग. आपकी खुशी हो दहेज दें या न दें, मुझे इसकी परवाह नहीं, हाँ बारात में जो लोग जाएँ, उनका आदर-सत्कार अच्छी तरह होना चाहिए, जिसमें मेरी और आपकी जगहँसाई न हो।

अथवा

उस दिन से फिर उनके होंटों पर हँसी न आई। यह जीवन उन्हें व्यर्थ-सा जान पडता था। कचहरी जाते, मगर मुकदमों की पैरवी करने के लिए नहीं, केवल दिल बहलाने के लिए।

घ. एक साहब बहादुर खडे होकर खूब उछले-कूदे जब वह नीचे आये, तब मैंने उनसे पूछा- सहब, सच बताओ, जब तुम सुराज का नाम लेते हो, तो उसका कौनसा रूप तुम्हारी आँखों के समने आता है?

अथवा

''मैं अब इतना दीन हूँ, कि भोजन और वस्त्र के लिए मुझे दान लेना पडता है। वह देवीदीन के घर दो महिने से पड़ा हुआ था, पर देवीदीन उसे भिक्षुक नहीं मेहमान समझा था।

च. भूखे-नंगे रहकर भगवान का भजन करें तो हम भी देखें। हमें कोई दोनों जून खाने को दे तो हम भी भगवान का जाप ही करते रहें। एक दिन खेत में ऊख गोडना पडे तो सारी भक्ति भूल जाए।

अथवा

''तो आपको ये विचार सौ साल पिछडे हुए मालूम होते हैं! तो कृपा करके अपने ताजे विचार बतलाइए। दम्पति कैसे सुखी रह सकते हैं, इसका ताजा नुसखा आपके पास है?''

.....